आचार्य नरेन्द्र देव

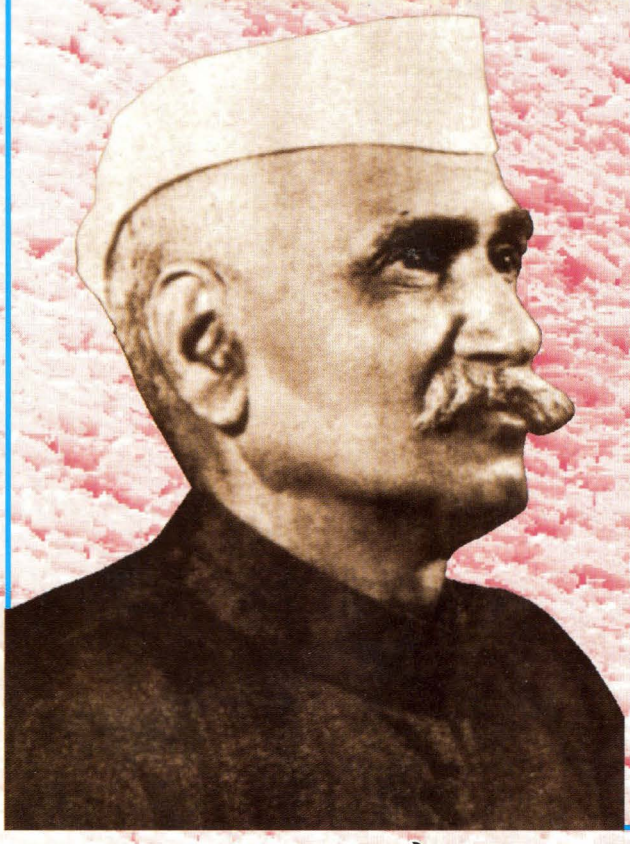

लोक सभा सचिवालय
नई दिल्ली
दिसम्बर 2004

आचार्य नरेन्द्र देव

लोक सभा सचिवालय
नई दिल्ली
दिसम्बर 2004

9–लार्डिस (पोल)/2004

© 2004 लोक सभा सचिवालय

लोक सभा के प्रक्रिया तथा कार्य संचालन नियम (ग्यारहवां संस्करण) के नियम 382 के अंतर्गत प्रकाशित तथा जैनको आर्ट इंडिया, 13/10, डब्ल्यू.ई.ए., सरस्वती मार्ग, करोल बाग, नई दिल्ली-110 005 द्वारा मुद्रित।

आमुख

आचार्य नरेन्द्र देव का भारत के महापुरुषों में महत्वपूर्ण स्थान है। वह एक उत्कट समाजवादी और वयोवृद्ध स्वतंत्रता सेनानी थे। उनका जीवन भारत की समृद्ध और बहुविध सांस्कृतिक विरासत का अनुपम समन्वय था। उन्होंने जीवनपर्यन्त देश में सच्ची समतावादी सामाजिक-आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्था कायम करने का प्रयास किया। उन्हें 'भारतीय समाजवाद का जनक' के रूप में जाना जाता था और उन्होंने अपना पूरा जीवन लोकतांत्रिक समाजवाद के उच्चादर्शों के संवर्धन, विकास और प्रचार-प्रसार के लिए समर्पित कर दिया। शिक्षा के लिए उनकी सेवाओं को भी चिरकाल तक याद रखा जाएगा।

यह कृतज्ञ राष्ट्र 10 दिसम्बर, 2004 को आचार्य जी की स्मृति में सम्मान व्यक्त कर रहा है जब माननीय प्रधान मंत्री श्री मनमोहन सिंह संसद भवन में आचार्य जी की प्रतिमा का अनावरण करेंगे।

प्रख्यात मूर्तिकार स्वर्गीय श्री अवतार सिंह पवार द्वारा बनाई गई आचार्य नरेन्द्र देव की यह कांस्य प्रतिमा 9 फुट ऊंची है जिसकी पीठिका 9 इंच की है। यह प्रतिमा उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा भेंट की गई है।

इस अवसर पर, लोक सभा सचिवालय यह पुस्तिका प्रकाशित कर रहा है जिसमें आचार्य नरेन्द्र देव का जीवनवृत्त और उनके कुछ चुनिंदा चित्र दिए गए हैं। लोक सभा सचिवालय के संसदीय संग्रहालय और अभिलेखागार द्वारा आचार्य जी के जीवन और काल पर एक प्रदर्शनी भी आयोजित की जा रही है।

हम माननीय लोक सभा अध्यक्ष, श्री सोमनाथ चटर्जी के आभारी हैं जिन्होंने इस समारोह के आयोजन में गहन रुचि ली और मूल्यवान मार्गदर्शन किया। हम प्रतिमा भेंट करने के लिए उत्तर प्रदेश सरकार के भी आभारी हैं। यह प्रकाशन आचार्य नरेन्द्र देव की स्मृति में एक विनम्र श्रद्धांजलि है। आशा है कि यह पुस्तिका सभी के लिए उपयोगी और ज्ञानवर्धक सिद्ध होगी।

नई दिल्ली,
10 दिसम्बर, 2004

गुरदीप चन्द मलहोत्रा
महासचिव
लोक सभा

विषय सूची

पृष्ठ

आमुख ..... (i)

आचार्य नरेन्द्र देव—जीवनवृत्त

जन्म, बाल्यकाल और शिक्षा 1

प्रारम्भिक जीवन 2

स्वतंत्रता संग्राम में उनकी भूमिका 3

उनका राजनीतिक जीवन 4

लोकतांत्रिक समाजवाद के जनक 6

शिक्षाशास्त्री के रूप में 8

बौद्ध साहित्य में योगदान 9

निधन और श्रद्धांजलि 10

चित्रात्मक झांकी 13

आचार्य नरेन्द्र देव

–जीवनवृत्त–

आचार्य नरेन्द्र देव, विद्वान, समाजवादी नेता और शिक्षाविद् थे। वह भारत माता के महान सपूत थे जिन्होंने भारत के भाग्य का निर्माण किया। उनके व्यक्तित्व में कतिपय ऐसे गुण समाहित थे जो आमतौर पर परस्पर असंगत प्रतीत होते थे। वह राजनेताओं के बीच विद्वान और विद्वानों के बीच में राजनेता थे। आचार्य जी के विशद ज्ञान, अत्यंत सादगी और सबसे बढ़कर उनके पारदर्शी स्वभाव से हर कोई प्रभावित हुआ। उनका राष्ट्र की एकता और अखण्डता में अगाध विश्वास था। वह एक क्रांतिकारी, विचारक और दार्शनिक थे तथा उन्होंने मानव सभ्यता और संस्कृति के एक नवीन युग की परिकल्पना की थी। आचार्य जी ने भारत को एक नया राजनीतिक और सामाजिक दर्शन प्रदान किया। वह सही अर्थों में भारत में लोकतांत्रिक समाजवाद के जनक थे। उन्होंने समाजवाद को स्वतंत्रता प्राप्ति में राष्ट्रीय संग्राम का एक अभिन्न अंग बनाने में सहायता की। उनका दृढ़ विश्वास था कि किसानों की सक्रिय भागीदारी के बिना भारत में कोई भी समाजवादी आंदोलन सफल नहीं हो सकता। वह एक महान शिक्षाविद्, सुसंस्कृत तथा विविध क्षेत्रों में रुचि रखने वाले व्यक्ति थे लेकिन, उन पर देश की सेवा और वंचितों और पददलितों के उत्थान की धुन सवार थी।

जन्म, बाल्यकाल और शिक्षा

आचार्य नरेन्द्र देव, श्री बलदेव प्रसाद और श्रीमती जवाहर देवी के दूसरे सुपुत्र थे। उनका जन्म 31 अक्तूबर, 1889 को सीतापुर, उत्तर प्रदेश में हुआ था। उनके माता-पिता एक मध्यम वर्गीय परिवार से संबंध रखते थे जो मूलतः सियालकोट, पंजाब से थे लेकिन बाद में फैजाबाद में बस गये थे। उनके पिता बाबू बलदेव प्रसाद न केवल एक प्रतिष्ठित वकील थे बल्कि समाज के एक प्रमुख व्यक्ति थे और भारतीय संस्कृति के जीवंत प्रतीक थे। आचार्य नरेन्द्र देव ने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा अपने पिता की देखरेख में प्राप्त की। उनके पिता उन्हें अंग्रेजी पढ़ाया करते थे और उन्होंने आचार्य नरेन्द्र देव को हिन्दी, संस्कृत, उर्दू, फारसी तथा अन्य विषयों का अध्ययन कराने के लिए अलग-अलग अध्यापकों की व्यवस्था की। आचार्य नरेन्द्र देव ने अल्पायु में ही दोषरहित, गायत्री मंत्र का उच्चारण करना और गीता का पाठ करना सीख लिया था। उन्हें तेरह वर्ष की आयु में विद्यालय भेजा गया और सातवीं कक्षा में भर्ती कराया गया। वहां उन्होंने एक होनहार और अध्ययनशील विद्यार्थी के रूप में अपनी पहचान बनायी।

वर्ष 1906 में प्रथम श्रेणी में अपनी हाईस्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात्, आचार्य नरेन्द्र देव ने इलाहाबाद में म्योर सेन्ट्रल कालेज में दाखिला लिया। वर्ष 1911 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से अंग्रेजी, इतिहास और संस्कृत विषयों के साथ प्रथम श्रेणी में स्नातक की शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् उन्होंने बनारस में क्वीन्स कालेज में दाखिला लिया जहां से उन्होंने पुरालेख विद्या (एपीग्राफी) और पुरालिपि विद्या (पैलिओग्राफी) सहित संस्कृत विषय में एम.ए. की डिग्री प्राप्त की। वहां पर उन्होंने डा. वेनिस और प्रोफेसर नोरमन के अधीन अध्ययन किया और इन दोनों से वह बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने पाली, प्राकृत, जर्मन और फ्रेंच भाषा का भी अध्ययन किया। वर्ष 1913 में एम.ए. डिग्री प्राप्त करने के पश्चात् वह पुनः इलाहाबाद वापस आ गये और 1915 में विधि (ला) में डिग्री प्राप्त की।

प्रारम्भिक जीवन

नरेन्द्र देव ने कानून की डिग्री लेने के पश्चात् फैजाबाद में वकालत शुरू की और शीघ्र ही एक सफल वकील के रूप में ख्याति अर्जित कर ली। परंतु महात्मा गांधी द्वारा सरकारी शैक्षिक संस्थाओं और न्यायालयों के बहिष्कार का आह्वान किये जाने के बाद 1921 में उन्होंने वकालत छोड़ दी और बाबू शिवप्रसाद गुप्ता द्वारा बनारस में स्थापित की गई राष्ट्रीय संस्था, काशी विद्यापीठ में नियुक्त हो गये। उन्होंने देखा कि उनका नया दायित्व उनके जीवन के दो महान उद्देश्यों अर्थात् अध्ययन और अध्यापन तथा सक्रिय राजनीति के कार्य को पूरा कर सकते हैं।

कालेज में और यहां तक कि "बार" में भी वह दैनिक समस्याओं से जूझते रहते थे। वह तिलक और अरविंद घोष का बहुत सम्मान करते थे जिनके लेखों से उनके जीवन और विचाराधारा पर गहरा प्रभाव पड़ा था। काशी विद्यापीठ में नियुक्ति के बाद ही उनके विचारों और कल्पना को अबाध अभिव्यक्ति मिली। 1926 में डा. भगवान दास के सेवानिवृत्त होने के बाद, नरेन्द्र देव प्राचार्य नियुक्त हुए और तभी से उनके नाम के आगे "आचार्य" शब्द स्थायी रूप से जुड़ा। वह विद्यापीठ में वर्ष 1921 से 1937 तक रहे। तथापि, इस महान संस्था के साथ वह जीवन भर जुड़े रहे। वह अध्यापक और प्राचार्य दोनों रूपों में बहुत सफल रहे और अपने सहयोगियों और विद्यार्थियों दोनों से ही उन्हें सम्मान और स्नेह प्राप्त हुआ। जिन लोगों को उन्होंने पढ़ाया और मार्गदर्शक, मित्र और काशी विद्यापीठ के दार्शनिक के तौर पर जो लोग उनके सान्निध्य में रहे, उन पर उन्होंने गहरी छाप छोड़ी। यह उनकी महान विद्वता, वाक्पटुता और प्रतिभाशाली अध्यापन, निष्ठापूर्ण एवं निस्वार्थ चरित्र ही था, जिसके फलस्वरूप विद्यापीठ में उत्साही और निष्ठावान विद्यार्थियों का उनके चारों ओर जमघट लगा रहता था। विद्यापीठ को उनके कारण ही इतनी अधिक प्रतिष्ठा मिली।

वहीं पर रहते हुए उन्होंने मानव जाति की अनेक समस्याओं और विशेष रूप से भारतीयों की समस्याओं का गहन और व्यापक अध्ययन किया। उनकी शक्तिशाली और तीक्ष्ण बुद्धि ने भांप लिया था कि शांतिपूर्ण क्रांति के माध्यम से ही समाज के मूलभूत ताने-बाने में पूर्ण परिवर्तन करके मानव जाति का भविष्य बेहतर बनाया जा सकता है।

स्वतंत्रता संग्राम में उनकी भूमिका

अपनी शिक्षा पूर्ण करने के उपरांत, नरेन्द्र देव इस आन्तरिक दुविधा में फंस गये कि उन्हें स्वयं को शैक्षणिक क्षेत्र को पूर्ण रूप से समर्पित करके स्कालरशिप प्राप्त करने की अपनी नैसर्गिक ललक पूरी करनी चाहिए अथवा स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेना चाहिए। आचार्य नरेन्द्र देव में शैक्षणिक अध्यवसाय के रुझान के साथ-साथ भारत की स्वतंत्रता के प्रति अपनी अटल प्रतिबद्धता भी थी। वास्तव में यही आचार्य जी के व्यक्तित्व की अद्वितीय विशेषता थी। आचार्य जी के जीवन में प्रबुद्ध विद्वता और अविचल क्रांतिकारी आदर्शवाद का ऐसा अनुपम समन्वय था जिसने उन्हें भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में एक महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया है। अपने विद्यार्थी जीवन में वह अरविन्द घोष और लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक की देशभक्ति की विचारधारा से बहुत प्रभावित थे। वर्ष 1914 में प्रथम विश्वयुद्ध छिड़ने पर उन्होंने देश में और देश से बाहर घट रही घटनाओं पर पैनी नजर रखी। उन्होंने भारत की राजनीतिक गुलामी और आर्थिक शोषण के विरुद्ध उनकी आत्मा ने विद्रोह कर दिया। तत्काल वह राष्ट्रीय आंदोलन में कूद पड़े। श्री तिलक के जेल से रिहा होने और कांग्रेस में शामिल होने के बाद नरेन्द्र देव उनसे मिले और इससे उनकी देशभक्ति का पूरा जोश उभरकर सामने आ गया। वह स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए उत्सुक रहे। वर्ष 1916 में उन्होंने फैजाबाद में होम रूल लीग की शाखा आरंभ की जिसके सचिव वह स्वयं थे। यहीं से राजनीति में उनकी सक्रिय भागीदारी आरंभ हुई। इसके बाद उन्होंने कांग्रेस द्वारा 1921 से 1942 के बीच शुरू किए गए सभी बड़े आंदोलनों में भाग लिया। वह पूर्ण स्वतंत्रता के पक्षधर थे और इसकी प्राप्ति के लिए प्रत्यक्ष कार्रवाई के हिमायती थे। समय बीतने के साथ-साथ उनकी यह दृढ़ धारणा बनती गयी कि केवल संगठित जन-आंदोलन के माध्यम से ही राष्ट्र की आजादी प्राप्त की जा सकती है। उन्होंने कांग्रेस के प्रत्येक आंदोलन में भाग लिया क्योंकि उन्हें लगा कि जनता इससे जुड़ी हुई है तथा राजनीतिक हथियार के रूप में सत्याग्रह से वह सदैव ही प्रभावित रहे।

वर्ष 1928 में वह जवाहर लाल नेहरू और सुभाष चन्द्र बोस द्वारा आरंभ किए गए "इंडिपेंडेंस आफ इंडिया लीग" में शामिल हो गये तथा इसके सचिव के रूप

में कार्य किया। सन् 1929 में उन्होंने बनारस में साइमन कमीशन के बहिष्कार का नेतृत्व किया। सन् 1930 में उन्हें सविनय अवज्ञा आंदोलन में गिरफ्तार किया गया तथा उन्होंने तीन माह जेल में बिताये। वर्ष 1932 में उन्होंने रायबरेली में 'लगान नहीं' अभियान में अपने छात्रों और सहयोगियों की एक टोली का नेतृत्व किया और पुन: उन्हें गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया। वर्ष 1939 में द्वितीय विश्वयुद्ध छिड़ने और कांग्रेस मंत्रिमंडलों द्वारा त्याग पत्र दिए जाने पर नरेन्द्र देव समाजवादी कांग्रेस पार्टी के नेता के रूप में ब्रिटिश सरकार द्वारा स्वतंत्रता की वास्तविकता स्वीकार करने में विफल रहने पर तुरंत राष्ट्रवादी आंदोलन आरंभ करने के पक्षधर थे। वर्ष 1940 में उन्हें व्यक्तिगत सत्याग्रह के दौरान गिरफ्तार किया गया और वर्ष 1942 में "भारत छोड़ो आंदोलन" शुरू होने पर उन्हें कार्यकारिणी के अन्य सदस्यों के साथ पुन: गिरफ्तार किया गया और वह 1945 तक अहमदनगर में नजरबंद रहे।

इसके पूर्व, उन्होंने गांधी जी द्वारा शुरू किए गए असहयोग आंदोलन और नमक सत्याग्रह में सक्रिय रूप से भाग लिया था। आचार्य जी एक कुशल और सच्चे सत्याग्रही थे और गांधी जी ने स्वयं उन्हें एक रत्न कहा था। उन्होंने गांधी जी के रचनात्मक कार्यक्रम में भी भाग लिया था और सामाजिक परिवर्तन के अग्रदूत के रूप में उन्हें उस कार्यक्रम की क्षमता पर विश्वास था। देश की आजादी प्राप्त करने के लिए आचार्य जी के गांधीवादी मार्ग में विश्वास का उनके मार्क्सवादी मित्र तथा सभी मित्र सम्मान करते थे।

उनका राजनीतिक जीवन

आचार्य नरेन्द्र देव हमारे देश के प्रमुख नेताओं में से एक थे इलाहाबाद प्रवास के दौरान अपने आरम्भिक जीवन में वह बाल गंगाधर तिलक, लाजपत राय, बिपिन चन्द्र पाल, अरविंद घोष और अन्य नेताओं से प्रभावित थे। वह वन्दे मातरम् और आर्य जैसे पत्रों के नियमित और अध्यवसायी पाठक थे। लेकिन बाद में जब वह गांधी जी के सम्पर्क में आए तो उनसे और उनकी विचारधारा से बहुत प्रभावित हुए। 1921 के बाद जब तक उन्होंने कांग्रेस को नहीं छोड़ा, वह उत्तर प्रदेश प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी और अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सदस्य बने रहे। 1928 में वह इंडिपेंडेंस आफ इंडिया लीग में शामिल हो गए। 1932 में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की पूना में आयोजित बैठक में कांग्रेस के अंदर ही एक अलग सोशलिस्ट पार्टी के गठन की आवश्यकता के बारे में चर्चा हुई थी। आचार्य जी का विचार था कि कृषक और श्रमिक वर्ग राजनीतिक आंदोलन का आधार बनें। इस उद्देश्य हेतु 1934 में पटना में एक सम्मेलन आयोजित किया गया था जिसकी अध्यक्षता आचार्य जी ने की। उन्होंने नई पार्टी का गठन किया जिसका नाम कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी रखा गया।

श्री जय प्रकाश नारायण को इसका पहला महासचिव बनाया गया था। नरेन्द्र देव जब तक जीवित रहे पार्टी के प्रमुख सिद्धान्तकार और पार्टी के प्रमुख नेताओं में बने रहे।

वर्ष 1936 में आचार्य जी उत्तर प्रदेश विधान सभा के लिए निर्वाचित हुए लेकिन उन्होंने कोई पद स्वीकार करने से मना कर दिया क्योंकि वह स्वतंत्रता के लिए राष्ट्रीय आंदोलन के चलते हुए किसी पद को स्वीकार करने के खिलाफ थे। लेकिन उन्होंने कांग्रेस सरकार को पूरे मनोयोग से सहयोग दिया खासतौर पर इसकी भूमि सुधार की नीति के लिए और विभिन्न महत्वपूर्ण शैक्षणिक समितियों जो विश्वविद्यालय और निचले स्तरों पर शैक्षणिक सुधारों के लिए गठित की गई थी, के अध्यक्ष के रूप में काम किया। 1946 में वह उत्तर प्रदेश विधान सभा के लिए पुनर्निर्वाचित हुए और इस बार पुन: उन्होंने मंत्रिमंडल में शामिल होने से मना कर दिया। यहां पर यह उल्लेखनीय है कि 1948 में जब पार्टी ने कांग्रेस से अलग होने का निर्णय लिया, नरेन्द्र देव और बारह अन्य सदस्यों ने विधान सभा की अपनी सीटों से त्याग पत्र दे दिया जिसके लिए वह कांग्रेस के टिकट पर निर्वाचित हुए थे। उनके लिए आधारभूत मानदंड और आचार संहिता सदस्यता से कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण थे। यह संसदीय लोकतंत्र की सर्वोच्च परम्पराओं का एक उदाहरण था। उसके बाद हुए उप-चुनावों में वे सभी हार गए। इससे कुछ समय पूर्व 1947 में उन्होंने लखनऊ विश्वविद्यालय के कुलपति का पद ग्रहण किया था। इस पद पर वह 1951 तक बने रहे जब उनके समक्ष बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के कुलपति का पद स्वीकार करने का प्रस्ताव रखा गया था और उन्होंने पद का कार्यभार संभाला। 1953 तक वह वहां इस पद पर रहे और बाद में अपने खराब स्वास्थ्य के कारण इस पद से त्यागपत्र दे दिया। वर्ष 1952 में और पुन: 1954 में उत्तर प्रदेश विधान सभा ने उन्हें राज्य सभा के सदस्य के रूप में चुना।

नरेन्द्र देव ने 1950 में थाइलैण्ड में आयोजित संयुक्त राष्ट्र विश्व महासंघ के क्षेत्रीय सम्मेलन में शिष्टमंडल के सदस्य के तौर पर हिस्सा लिया था तथा बर्मा की सामाजिक और राजनीतिक स्थितियों का अध्ययन करने के लिए रंगून में भी कुछ समय बिताया। वर्ष 1952 में वह विजय लक्ष्मी पंडित के नेतृत्व में एक सद्भावना दल के सदस्य के रूप में चीन गए। वहां से लौटने के पश्चात् यद्यपि नरेन्द्र देव व्यक्तिगत रूप से अपने दल का आचार्य जे.बी. कृपलानी के नेतृत्व वाली किसान मजदूर प्रजा पार्टी के साथ प्रस्तावित विलय के खिलाफ थे परंतु बातचीत में अपने दल का प्रतिनिधित्व करने के लिए सहमत हो गए जिसके परिणामस्वरूप प्रजा सोशलिस्ट पार्टी के नाम से एक नई पार्टी का अभ्युदय हुआ। पार्टी के लिए वह सदैव

एक मजबूत स्तम्भ रहे। उन्होंने 1954 में नागपुर अधिवेशन के दौरान पार्टी का सभापतित्व किया। दुर्भाग्यवश, वह 1955 में गया अधिवेशन में शामिल नहीं हो सके जबकि वहां स्वीकृत नीतिगत वक्तव्य उन्हीं के मार्गदर्शन में तैयार किया गया था।

राजनीतिक क्षेत्र में गहन ज्ञान और विद्वता के मामले में आचार्य नरेन्द्र देव की तुलना केवल लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक से ही की जा सकती थी। आचार्य जी ने भारतवर्ष को एक नया राजनीतिक और सामाजिक दर्शन दिया। महात्मा गांधी के लिए उनके मन में असीम आदर का भाव था और वह गांधी जी के सत्य और अहिंसा के सिद्धान्तों के प्रति पूरी तरह समर्पित थे। वह साध्य और साधन दोनों की शुचिता में विश्वास रखते थे।

आचार्य नरेन्द्र देव ने परंपरागत धर्म के साथ चिपके रहने की बजाय गोखले और गांधी के समान ही यह सोचा कि राजनीति का एक नैतिक अभिप्राय होना ही चाहिए। सामाजिक उत्तरदायित्व, विनम्रता, सेवाभाव तथा अपने देश के स्त्री-पुरुषों के कल्याण हेतु सहर्ष एवं स्वेच्छा से बलिदान की भावना को वह सर्वाधिक महत्वपूर्ण मानते थे।

लोकतांत्रिक समाजवाद के जनक

आचार्य नरेन्द्र देव का समाजवाद में अटूट विश्वास था। समाजवाद के सभी स्वरूपों में से आचार्य नरेन्द्र देव कार्ल मार्क्स और उनके विचारों से काफी प्रभावित थे। वह कार्ल मार्क्स को एक महान सामाजिक वैज्ञानिक मानते थे। हालांकि वह उन सभी बातों का समर्थन नहीं करते थे जो उस समय मार्क्स ने कही थी। रूसी और चीनी साम्यवाद की कतिपय प्रवृत्तियों ने उन्हें निराश किया और उनका यह विश्वास और अटल हो गया कि दुखी मानवता की उन्मुक्ति केवल लोकतांत्रिक समाजवाद में ही संभव है। उनके लिए समाजवाद केवल एक राजनीतिक या आर्थिक आंदोलन नहीं था, बल्कि एक नया दर्शन, एक नई जीवन शैली, एक नई संस्कृति थी जिसमें एक नई आचार संहिता थी। उनका विश्वास था कि इससे एक ऐसे नए क्षितिज का साक्षात्कार होगा जिसमें ग्रह नक्षत्रों के बीच प्रकाश के स्पंदन की भांति ही स्त्री और पुरुष अपने उदात्त और उत्कृष्ट विचारों और भावनाओं से एक दूसरे को आलोकित कर सकेंगे और एक ऐसे समाज का निर्माण करेंगे जिसमें घृणा, ईर्ष्या और शोषण का कोई नामोनिशान नहीं होगा। लोकतांत्रिक समाजवाद के बारे में उनके यही विचार थे।

आचार्य जी का विश्वास था कि समाजवाद से मानव व्यक्तित्व का मुक्त विकास होना चाहिए। उनका विश्वास था कि समाजवादी उद्देश्य ऐसे होने चाहिएं जिनसे सामाजिक प्रसन्नता में वृद्धि हो। व्यष्टिगत प्रसन्नता तो सामाजिक प्रसन्नता का अनिवार्य

घटक है। इसलिए वह भारत के स्वतंत्रता संघर्ष को ऐसा क्रांतिकारी चरण मानते थे जिसमें भारतीय लोकाचार में जन्मा हुआ आंदोलन हमारे समाज को शोषण रहित और समतावादी मूल्यों को समर्पित युग की ओर ले जाता हो।

भारतीय समाजवादी विचारधारा के लिए आचार्य जी का सबसे महत्वपूर्ण योगदान उनकी समाजवाद के दर्शन को मूलरूप से समृद्ध बनाने के लिए नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों की अनिवार्यता की अवधारणा थी। उनका विश्वास था कि पूंजीवाद की राजनीतिक और आर्थिक प्रणाली में केवल ढांचागत परिवर्तन करने से वास्तविक समाजवादी समाज नहीं बन पाएगा। इसमें प्राण डालने हेतु सामाजिक मूल्यों की नैतिक और सांस्कृतिक अवधारणा की आवश्यकता है। समाजवादी नैतिकता की अवधारणा की स्थापना की आवश्यकता पर बल देते हुए प्रजा सोशलिस्ट पार्टी के गया थीसिस में उन्होंने लिखा था:

> स्वतंत्रता, समता और लोकहित समाजवादी नैतिकता के मूलभूत सिद्धांत हैं। संपूर्ण सभ्य विश्व में, प्राचीन काल के ऋषियों, आचार्यों और पैगम्बरों, मध्यकाल के संतों और सूफियों और आधुनिक युग के पुनर्जागरणवादियों और क्रांतिकारियों के भी यही सिद्धांत थे। इनके आधार पर भारत में एक तरह का आध्यात्मिक मानववाद विकसित होने लगा..... हमारा कर्त्तव्य है कि आध्यात्मिक मानववाद को धर्मतंत्रवादी प्रकृति के धार्मिक-सामाजिक मानदंडों से भिन्न करते हुए मानव स्वभाव के लोकतांत्रिक और समाजवादी मानदंडों के रचनात्मक संश्लेषण के माध्यम से समाजवादी नैतिकता का निर्माण करें।

आचार्य जी सच्चे समाजवादी समाज के निर्माण के लिए समाजवादी संस्कृति का दृष्टिकोण विकसित करने की बात बार-बार किया करते थे। उन्होंने लिखा था कि "समाजवाद केवल आर्थिक आंदोलन ही नहीं बल्कि यह एक सांस्कृतिक आंदोलन भी है। इसमें वास्तविक मानव संस्कृति के लिए भी उतना ही प्रयास किया गया है जितना कि एक नई आर्थिक व्यवस्था के लिए।"

आचार्य जी भारत में लोकतांत्रिक समाजवाद के लिए जिस आदर्श का अनुकरण कराना चाहते थे वह साम्यवादी देशों में प्रवृत्त मार्क्सवादी समाजवादी व्यवस्था से भिन्न था। आचार्य नरेन्द्र देव ने राजनीतिक और आर्थिक शक्ति के विकेन्द्रीकरण की गांधीवादी अवधारणा को पूरे मन से स्वीकार किया था। वह भारत में जिस लोकतांत्रिक समाजवाद का अनुकरण कराना चाहते थे उसकी मूल बातों को बताते हुए आचार्य जी ने यह भी लिखा था:

> "लोकतांत्रिक समाजवाद अधिकारों और दायित्वों के विकेन्द्रीकरण का पक्षधर है। इसमें विकेन्द्रीकरण को लोकतंत्र का आवश्यक घटक माना गया है तथा उसकी

ऐसी दृढ़ मान्यता है कि एक लोकतांत्रिक केन्द्र से सभी लोक कार्य करने का प्रयास किया जाए तो वह विशाल अफसरशाही का केन्द्र बन जाएगी जिससे मुक्त लोकतांत्रिक जीवन असम्भवप्राय हो जाएगा.....विकेन्द्रीकृत लोकतंत्र होने से ही लोक कार्यों से जनता का सक्रिय जुड़ाव, अफसरशाही और एकदलवाद की बुराई से मुक्त समाज और उचित लोकतांत्रिक माहौल उत्पन्न होना सुनिश्चित हो सकता है तथा प्रशासन इन सीधे-सीधे संबंधित सभी व्यक्तियों की आवश्यकताओं और विचारों पर प्रतिक्रिया व्यक्त कर सकता है।''

अध्यात्म और मानववाद के उच्च आदर्शों के अनुरूप और भारतीय परंपरा जो गांधी जी तक पहुंची, उसे गहराई से आत्मसात करके आचार्य देव की समाजवाद की रणनीति में हिंसा के लिए यथासंभव कोई स्थान नहीं था। वह इस बात के प्रति आश्वस्त थे कि जन समर्थन प्राप्त क्रांतिकारी आंदोलन मूलत: अहिंसक होता है। उनके अनुसार वास्तविक क्रांति तभी आ सकती है जब अधिकांश जनता सक्रिय रूप से उसके लिए तैयार हो। ऐसे आंदोलन में शक्ति सैन्य बल से नहीं अपितु राजनीतिक बल से प्राप्त होती है जिसका अर्थ है जनता का संगठित संकल्प। इस प्रकार राजनीतिक दृष्टि से गांधी जी के अहिंसा सिद्धांत को आचार्य नरेन्द्र देव की विचारधारा में अभिव्यक्ति मिलती है।

शिक्षाशास्त्री के रूप में

आचार्य जी की अपने संपूर्ण जीवन में शिक्षा के प्रति गहरी रुचि थी और वह इसे देश में राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक क्रांति का मुख्य माध्यम मानते थे। उनका मानना था कि प्रारंभिक चरणों में शिक्षा को लाभदायक क्रियाकलापों के साथ जोड़ा जाना चाहिए, इसलिए उन्होंने महात्मा गांधी द्वारा प्रतिपादित प्राथमिक शिक्षा की संकल्पना का स्वागत किया। आचार्य नरेन्द्र देव सबके लिए शिक्षा एवं ज्ञान, ज्ञान एवं कार्य के सामंजस्य, तकनीकी शिक्षा का मानविकी शिक्षा से तथा लोकतांत्रिक नागरिकता में सामाजिक शिक्षा के समुचित समन्वय के समर्थक थे। वह चाहते थे कि विश्वविद्यालय स्तर तक नि:शुल्क शिक्षा दी जाए तथा समाज के पिछड़े वर्गों के शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक उन्नयन की ओर विशेष ध्यान दिया जाए। उनके अनुसार विश्वविद्यालयों का कार्य पारंपरिक शिक्षा एवं ज्ञान सम्प्रेषित करना ही नहीं है अपितु प्रमुख रूप से शोध एवं ज्ञान के केन्द्र के रूप में कार्य करना तथा देश के युवा वर्ग को जीवन के समस्त पहलुओं में सहभागी बनने एवं नेतृत्व करने के लिए तैयार करना है। वह इस बात के भी समर्थक थे कि माध्यमिक स्तर तक प्रादेशिक भाषाएं शिक्षा का माध्यम हों तदुपरांत शिक्षा का माध्यम राष्ट्र भाषा होनी चाहिए जो उनके अनुसार हिंदी ही हो सकती है। वह सभी भारतीय भाषाओं के लिए एक ही लिपि के समर्थक थे

और उत्तर भारत में दक्षिण भारतीय भाषाओं तथा दक्षिण भारत में हिन्दी के पठन-पाठन की अनुशंसा करते थे।

सभी शिक्षाविद एक शिक्षाविद के रूप में उनका सम्मान करते थे। स्वतंत्रता के बाद उन्हें लखनऊ विश्वविद्यालय तथा बाद में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के कुलपति के पद का दायित्व सौंपा गया।

बौद्ध साहित्य में योगदान

आचार्य नरेन्द्र देव बुद्ध द्वारा प्रचारित प्रेम एवं अहिंसा के सिद्धांत से काफी प्रभावित थे। पाश्चात्य दर्शनशास्त्र का अध्ययन करने के उपरांत वह बौद्ध धर्म एवं दर्शन की ओर उन्मुख हुए। इससे उन्हें बौद्ध धर्मों में प्रतिपादित विलक्षण नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों को समझने की अंतर्दृष्टि प्राप्त हुई। पाली भाषा में उपलब्ध विशद साहित्य को उन्होंने गहराई से समझा। बुद्धधर्म में उनकी गहन रुचि भारतीय संस्कृति, जिसने मानवता के वृहत् अंश को बुद्धधर्म की ओर आकर्षित किया, में शोध हेतु उनके प्रेम से उपजी है। आचार्य जी का तर्क था कि बुद्ध दर्शन में यह विशेषता है कि उसके माध्यम से हम अपनी पुरानी धारणाओं को आधुनिक विचारधारा के परिप्रेक्ष्य में आंक सकते हैं; मनोविज्ञान और मानव मस्तिष्क की अंत-क्रिया को भली-भांति समझ सकते हैं; सर्वजनहिताय हेतु व्यक्तिगत प्रयासों की आवश्यकता, तर्कसंगत चिंतन और जातिवाद के विरोध की आवश्यकता, धर्मग्रंथों पर निर्भरता और देव-वाद में विश्वास की आवश्यकता को समझ सकते हैं। उनकी यह धारणा थी कि बुद्धधर्म द्वारा प्रदत्त नैतिकता और आध्यात्मिकता का तार्किक एवं मर्मस्पर्शी प्रदर्शन हमें अपनी संस्कृति को अंधविश्वासों की बुराई से मुक्ति दिलाने में सहायता प्रदान करता है।

आचार्य जी की इच्छा थी कि बुद्धधर्म की प्रामाणिक पुस्तकों का हिन्दी अनुवाद उपलब्ध करवाया जाए। दुर्लभ ऐतिहासिक महत्व की उनकी हिन्दी कृति "बौद्ध धर्म दर्शन" इस क्षेत्र में उनका महत्वपूर्ण योगदान है। इस पुस्तक में बुद्धधर्म और दर्शन के सभी पक्ष शामिल हैं। हिंदी अथवा किसी अन्य भाषा में ऐसी कोई अन्य पुस्तक नहीं है जिसमें बुद्धधर्म और दर्शन मनोविज्ञान और तर्कशास्त्र की सर्वाधिक दुरूह समस्याओं का इतना विस्तृत विवरण इतनी अच्छी तरह से किया गया हो।

आचार्य जी ने कुछ अन्य बुद्धग्रंथों जैसे वसुबंधु का अभिधर्म कोष; और विज्ञप्ति मातृसिद्धि, जो बुद्धधर्म की विज्ञानवाद विचारधारा पर एक प्रामाणिक टीका है, इत्यादि का संपूर्ण अनुवाद किया। आचार्य जी द्वारा अनूदित अन्य ग्रंथ हैं—अभिधम्माथासांगहो नामक पाली ग्रंथ। उन्होंने क्षेमेन्द्र रचित प्राकृत व्याकरण का भी अनुवाद किया था। बौद्ध साहित्य आचार्य जी के योगदान के प्रति सर्वदा आभारी रहेगा।

निधन और श्रद्धांजलि

आचार्य नरेन्द्र देव का जीवन मानवता और राष्ट्र हेतु संघर्ष, बलिदान, कष्ट और सेवा की गाथा है। वर्ष 1926 से आचार्य जी दमा से पीड़ित थे लेकिन बाद के वर्षों में उनकी स्थिति और बिगड़ गई और 19 फरवरी, 1956 को उनका देहावसान हो गया।

दिवंगत नेता को 20 फरवरी, 1956 को लोक सभा तथा राज्य सभा में भाव-भीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई। आचार्य नरेन्द्र देव के निधन पर भाव-भीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री जवाहर लाल नेहरू ने कहा:-

"आचार्य नरेन्द्र देव का निधन, हमारे में से कईयों और मैं समझता हूं कि देश के लिए एक महत्वपूर्ण व्यक्ति के निधन से कहीं अधिक बड़ी घटना है। वह एक अद्‌भुत विलक्षणता से सम्पन्न व्यक्ति थे, उनकी विलक्षणता अनेक क्षेत्रों में थी—विलक्षण विचारधारा, विलक्षण मानस और बुद्धि, विलक्षण सत्यनिष्ठा तथा हर दृष्टि से वह एक विलक्षण व्यक्ति थे। यह हमारे लिए एक दुखद क्षति और हमारे राष्ट्र के लिए भी एक दुखद क्षति है...।"

उनके दु:खद निधन पर शोक व्यक्त करते हुए तत्कालीन गृह मंत्री पं. गोविन्द वल्लभ पंत ने कहा था:

"...आचार्य नरेन्द्र देव हमारे देश के एक अग्रणी नेता थे। वह पुरानी पीढ़ी के योग्य प्रतिनिधि थे। वह एक महान शिक्षाविद तथा महान संस्कृति के प्रतिनिधि थे। उनकी कई क्षेत्रों में दिलचस्पी थी परंतु मुख्यत: उनकी रूचि देश की सेवा और देश की जनता के उत्थान में थी.....इतिहास में उनके कृत्य उन लोगों के लिए प्रेरणा स्रोत और मार्गदर्शक रहेंगे जो महान जीवन व्यतीत करना चाहते हैं, प्रत्येक नेक कार्य का समर्थन करना चाहते हैं तथा नि:स्वार्थ भाव से दूसरों की सेवा और उत्थान करना चाहते हैं और जीवन को उदात्त तथा परिष्कृत करना चाहते हैं..."

उनके गुणों और राष्ट्र के प्रति उनके योगदान की प्रशंसा करते हुए तत्कालीन उपराष्ट्रपति और राज्य सभा के सभापति डा. राधाकृष्ण ने कहा था:-

"आचार्य नरेन्द्र अपने आदर्शवाद, निष्ठा और स्वतंत्र विचारों के लिए प्रख्यात थे। समाजवाद की लोकप्रियता से पूर्व ही...वह एक समाजवादी थे। शिक्षा में उनके योगदान को सदैव याद किया जायेगा...हमने एक महान देशभक्त, महान नेता और एक अत्यन्त प्रिय व्यक्ति को खो दिया है।"

लोक सभा के तत्कालीन उपाध्यक्ष श्री एम. अनन्तशयनम आयंगर, ने निम्नलिखित शब्दों में अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की:

''...देश ने एक महान व्यक्तित्व और एक महान देशभक्त खो दिया है। अपनी विद्वता के बावजूद भी वह एक सरल व्यक्ति थे। उन्होंने राष्ट्र कल्याण के लिए अपना सारा जीवन अर्पित कर दिया। उनका बलिदान और राष्ट्र सेवा असीम है...।''

आचार्य जे.बी. कृपलानी, संसद सदस्य ने निम्नलिखित शब्दों में दिवंगत आत्मा को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की:

''वह हमेशा हमारी पार्टी के लिए शक्ति के प्रकाशपुंज रहे। वह एक महान देश भक्त और उच्च कोटि के विद्वान थे। उनकी महान विद्वता में अत्यंत विनम्रता थी।... दूसरों से वैचारिक मतभेद होने के बावजूद भी वह सभी के प्रति शिष्टता और मित्रता का भाव रखते थे।''

प्रो. एस.एन. मुखर्जी, संसद सदस्य ने निम्नलिखित शब्दों में अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की:

''आचार्य नरेन्द्र देव हमारे राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लेने वाले उन नेताओं में से थे जिनके नाम किंवदन्ती बन गये हैं। ऐसा उनके दृढ़ और अपूर्व गुणों के कारण नहीं बल्कि उनके चरित्र के कारण ही था। उनके ज्ञान और उनकी भावनाओं के विशिष्ट समन्वय ने एक वास्तविक व्यक्तित्व का सृजन किया।''

आचार्य नरेन्द्र देव

–चित्रात्मक झांकी–

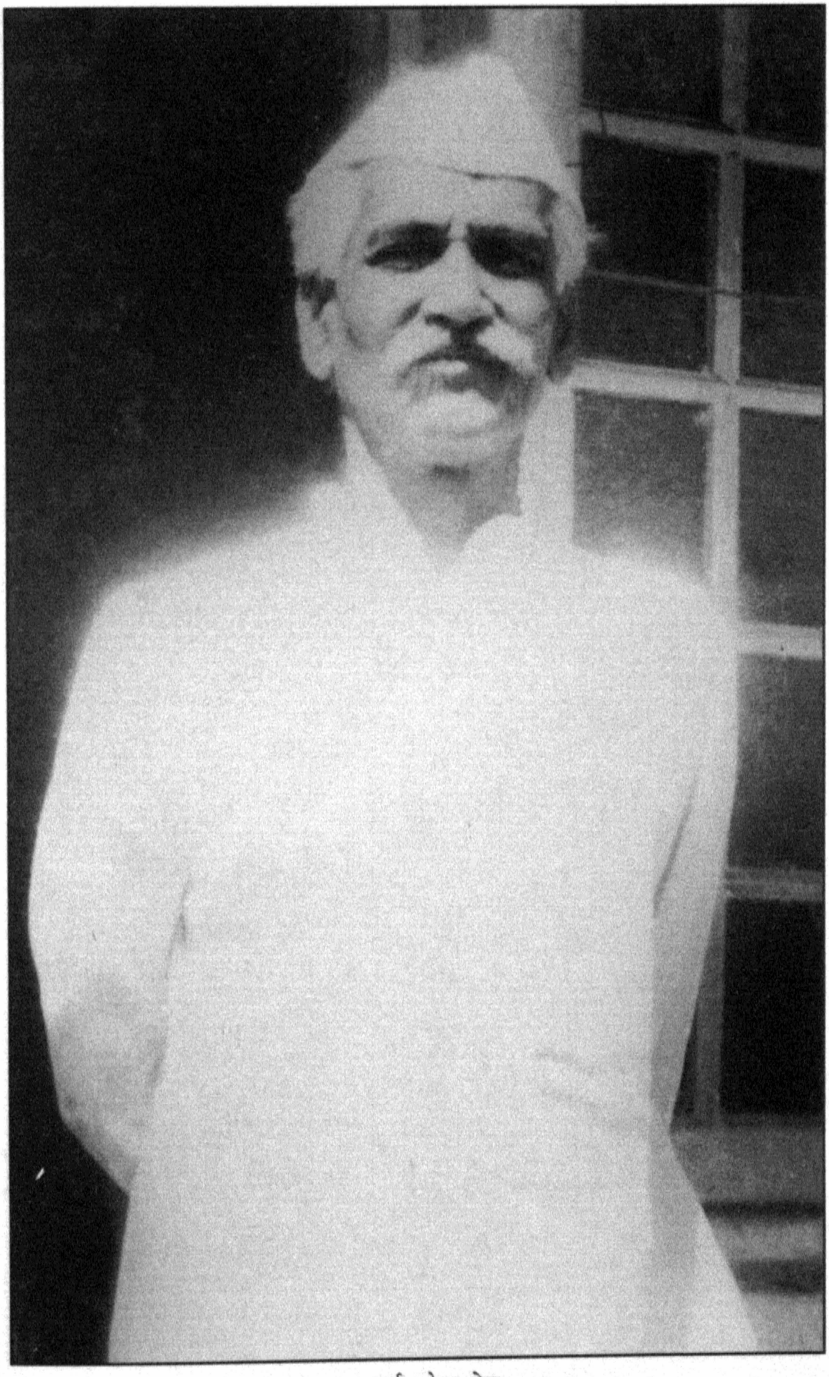

आचार्य नरेन्द्र देव

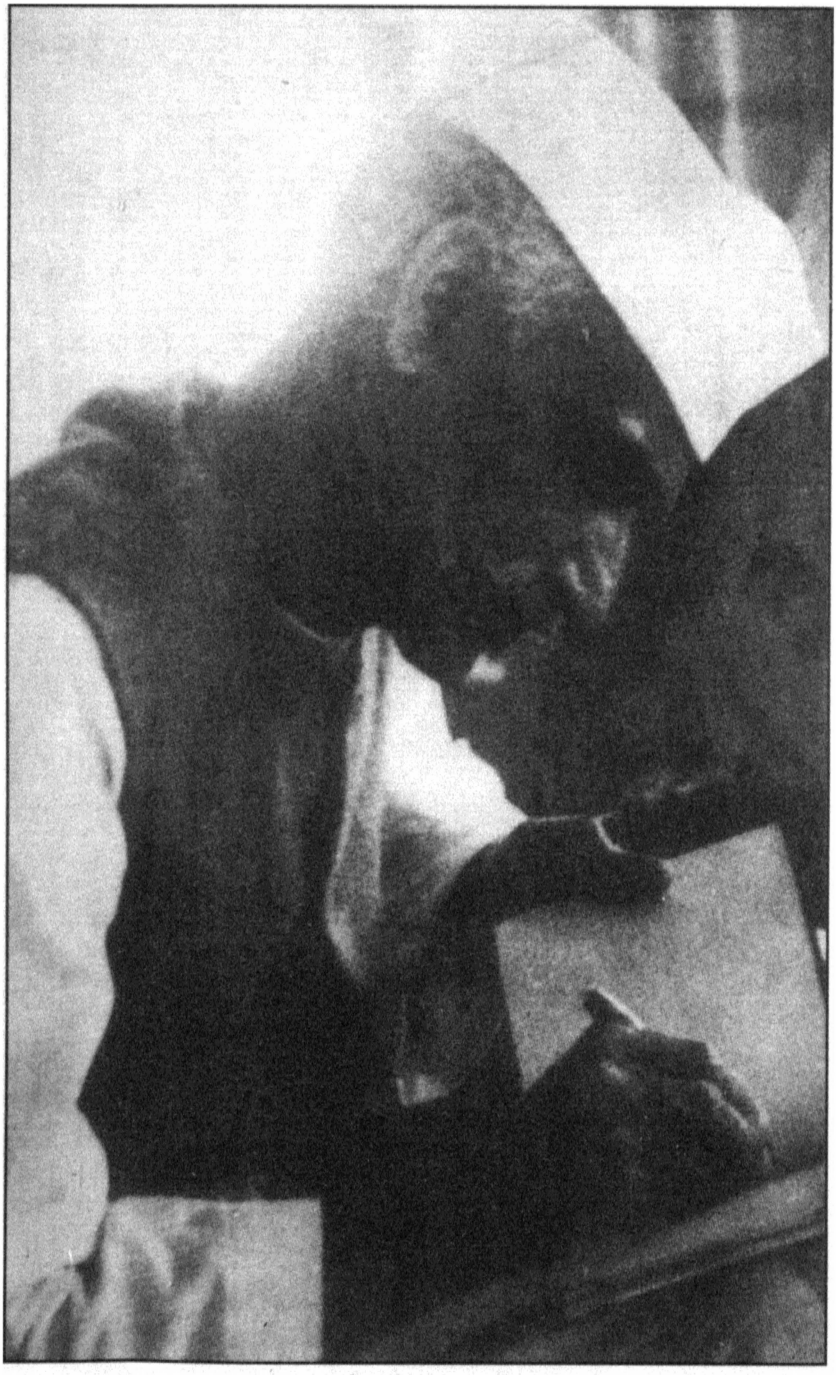

आचार्य नरेन्द्र देव लेखन में लीन

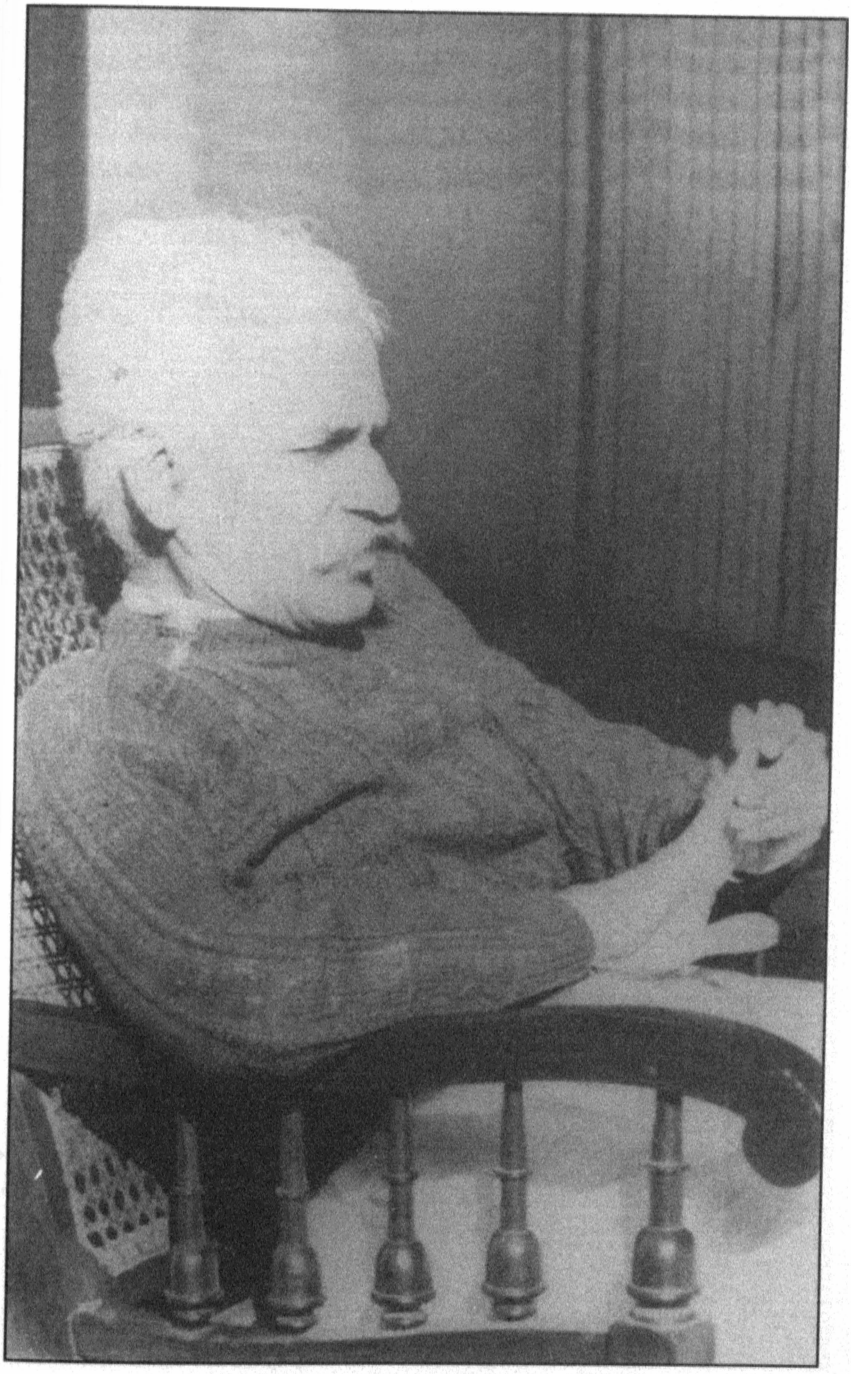

आचार्य नरेन्द्र देव विचारमग्न मुद्रा में

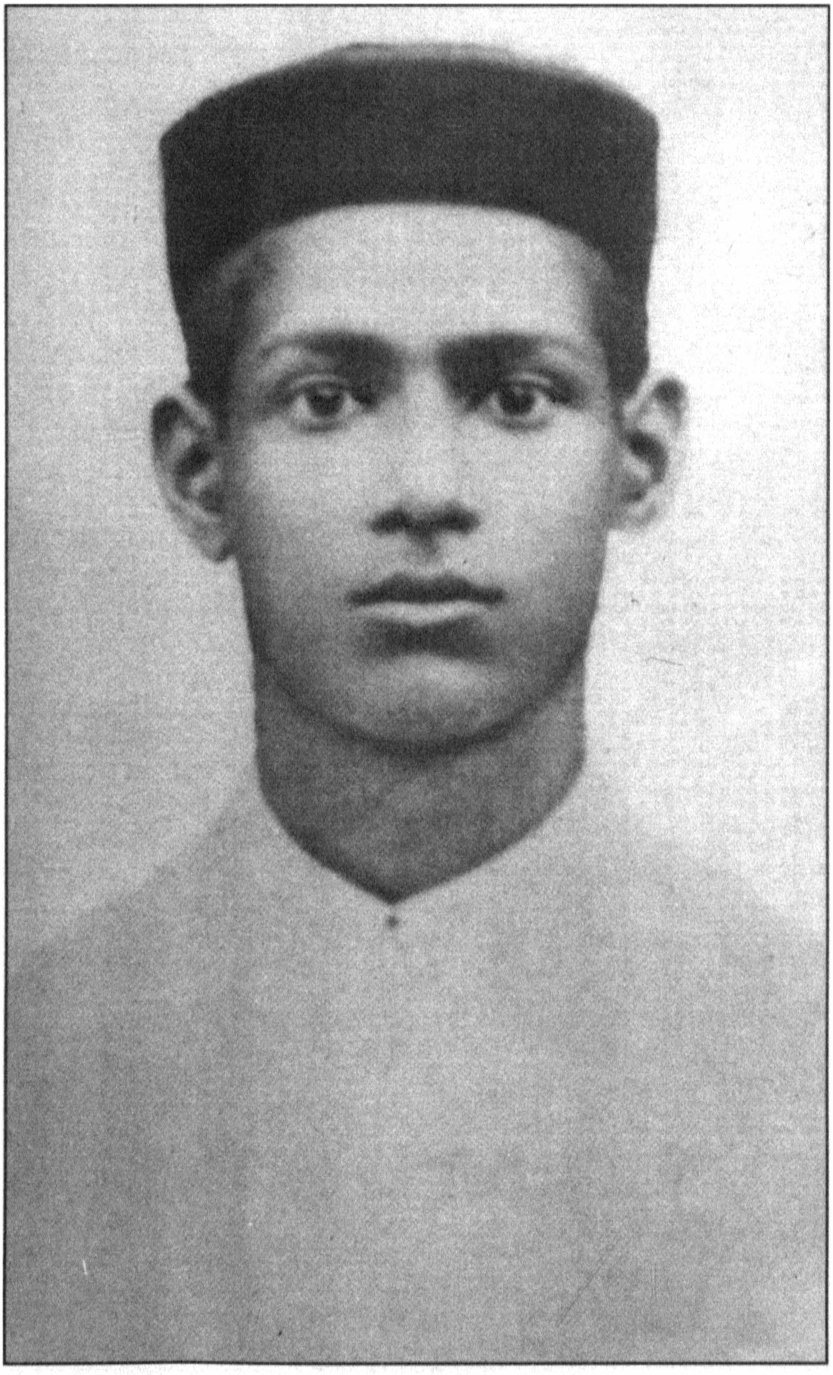

आचार्य नरेन्द्र देव विद्यार्थी जीवन में

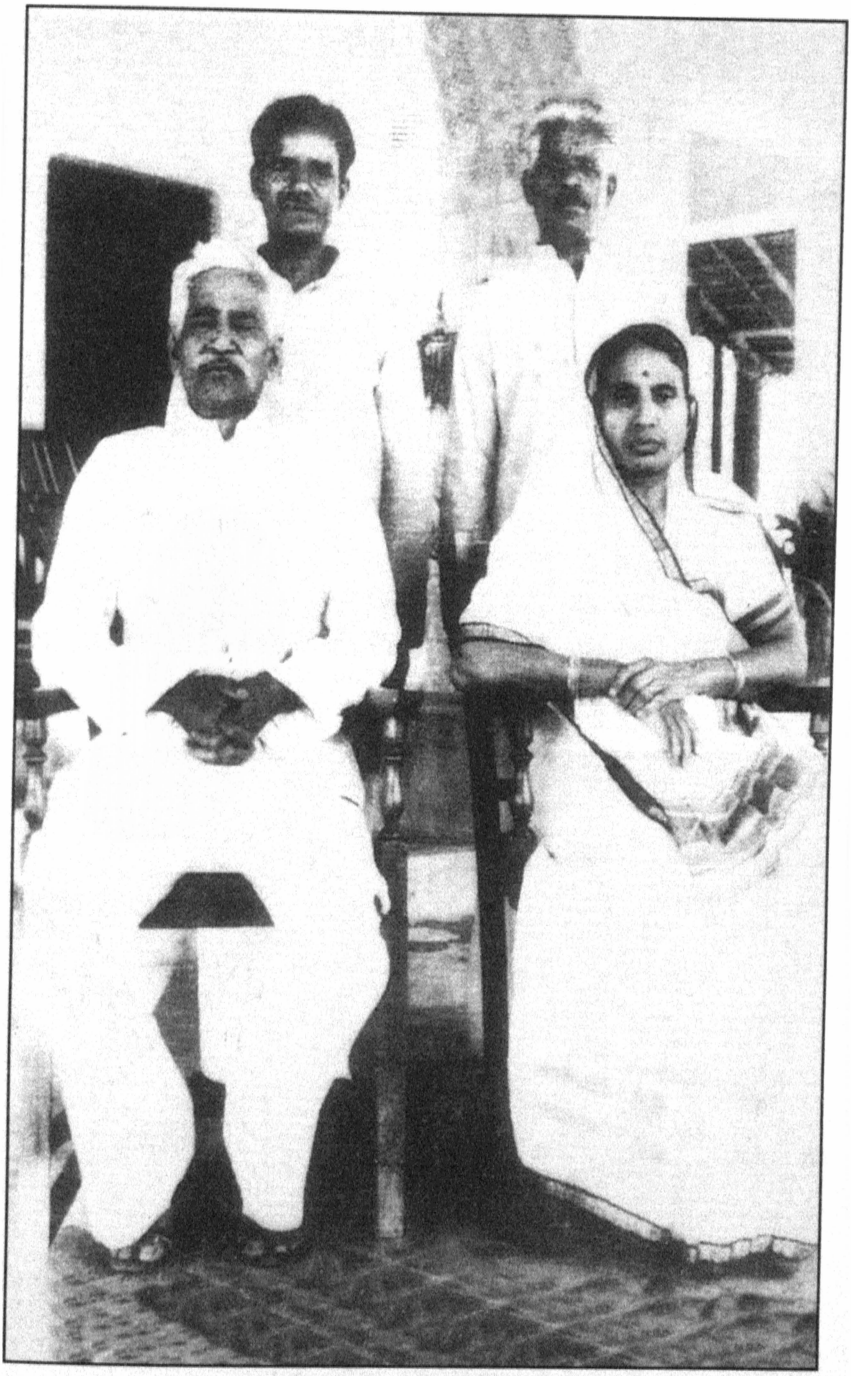

आचार्य नरेन्द्र देव अपनी पत्नी और अन्य लोगों के साथ

आचार्य नरेन्द्र देव 1930 में अहमदाबाद में गुजरात विद्यापीठ के आठवें दीक्षांत समारोह में भाषण देते हुए

आचार्य नरेन्द्र देव 1934 में लखनऊ में गिरधारी सिंह हाईस्कूल में चरखा-तकली कक्षाओं का उद्घाटन करते हुए

आचार्य नरेन्द्र देव को 1940 में उन्नाव जिला राजनीतिक सम्मेलन के अध्यक्ष निर्वाचित होने पर बग्घी में बैठाकर ले जाते हुए

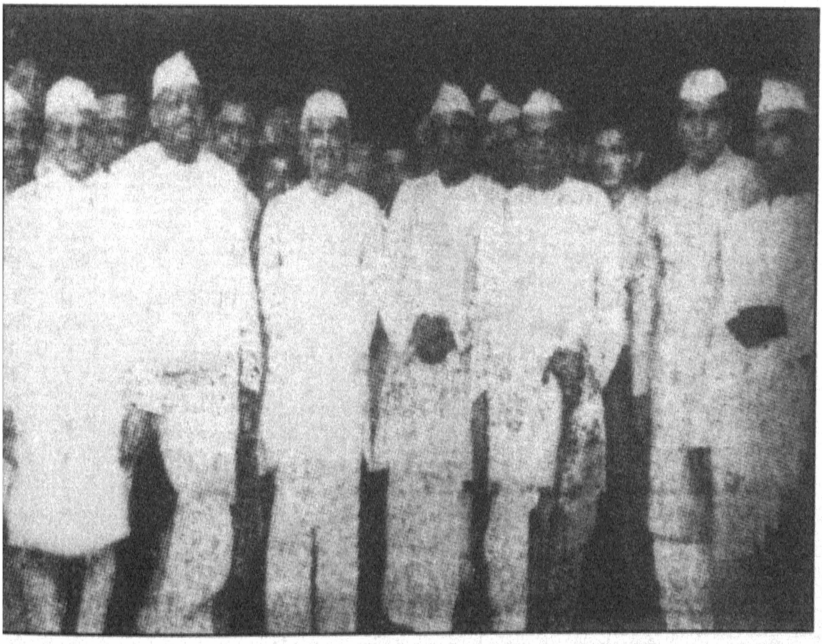

आचार्य नरेन्द्र देव 1945 में मुम्बई में श्री प्रकाश, सम्पूर्णानन्द और श्री कृष्ण सिन्हा के साथ

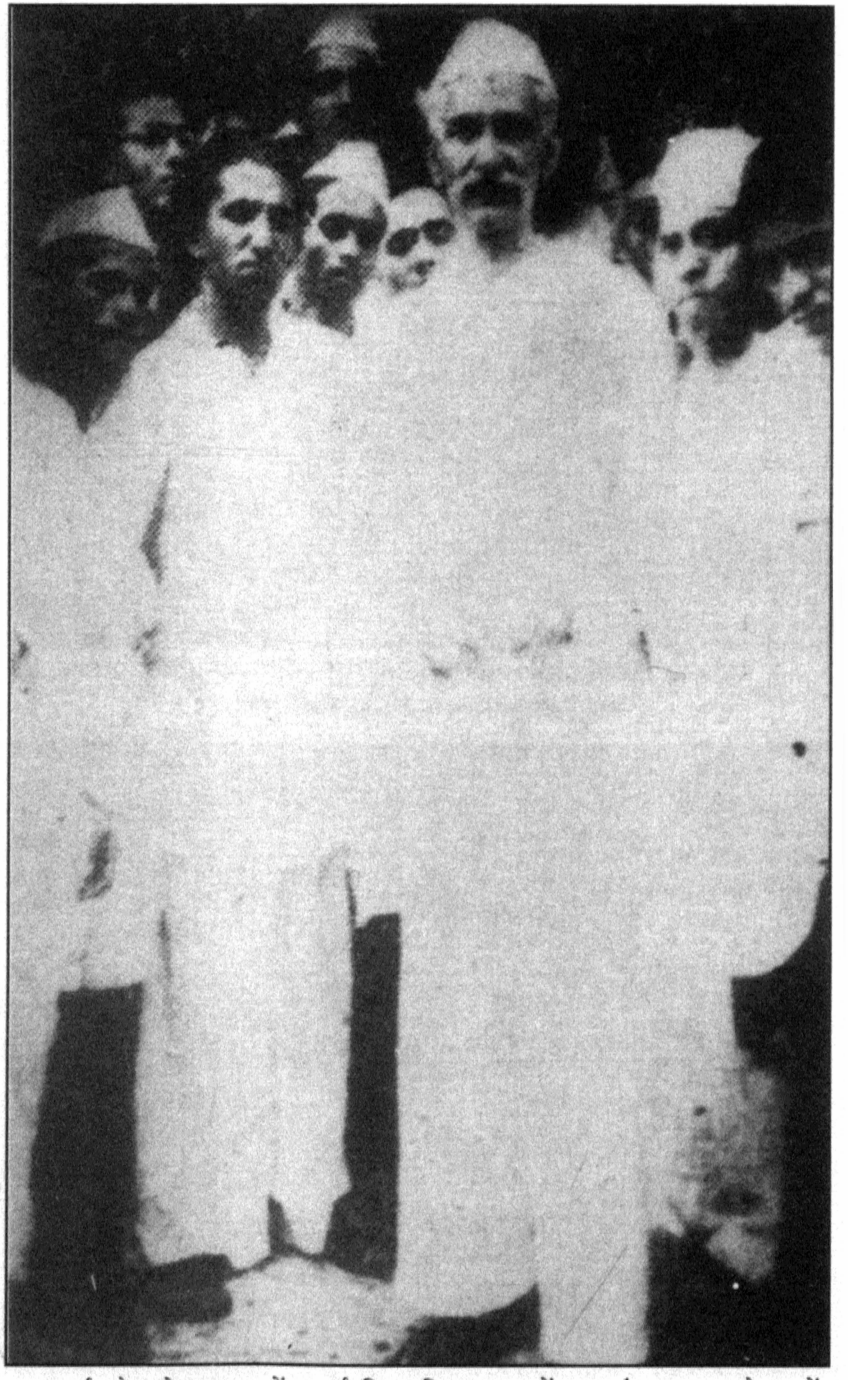

आचार्य नरेन्द्र देव 1945 में मुम्बई स्थित जिन्ना हाल में एक संवाददाता सम्मेलन में

आचार्य नरेन्द्र देव 1948 में इलाहाबाद में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में सम्पूर्णानन्द, सरदार वल्लभभाई पटेल और सरोजिनी नायडू के साथ

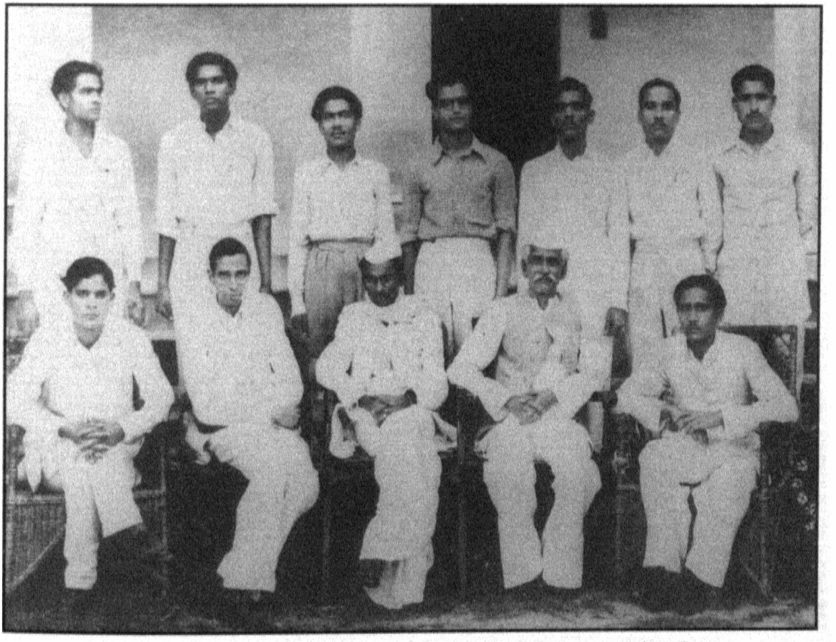

आचार्य नरेन्द्र देव 1949-50 में लखनऊ विश्वविद्यालय सांस्कृतिक क्लब के सदस्यों के साथ

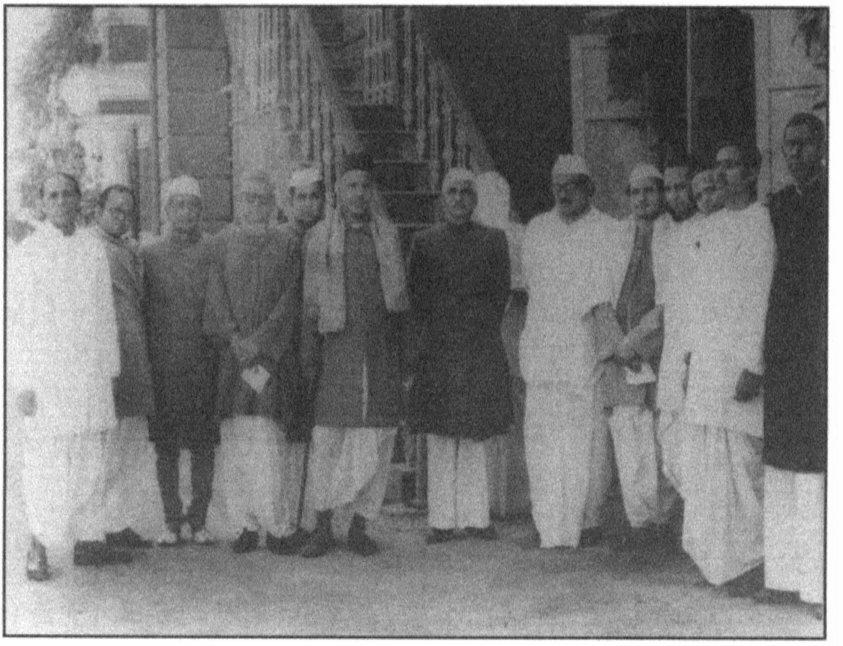

आचार्य नरेन्द्र देव 1950 में काशी नागरी प्रचारिणी सभा में

आचार्य नरेन्द्र देव 1951 में लखनऊ विश्वविद्यालय में डा. राजेन्द्र प्रसाद के साथ

आचार्य नरेन्द्र देव 1952 में पेइचिंग में के.एम. पन्निकर और विजयलक्ष्मी पंडित के साथ मई दिवस परेड देखते हुए

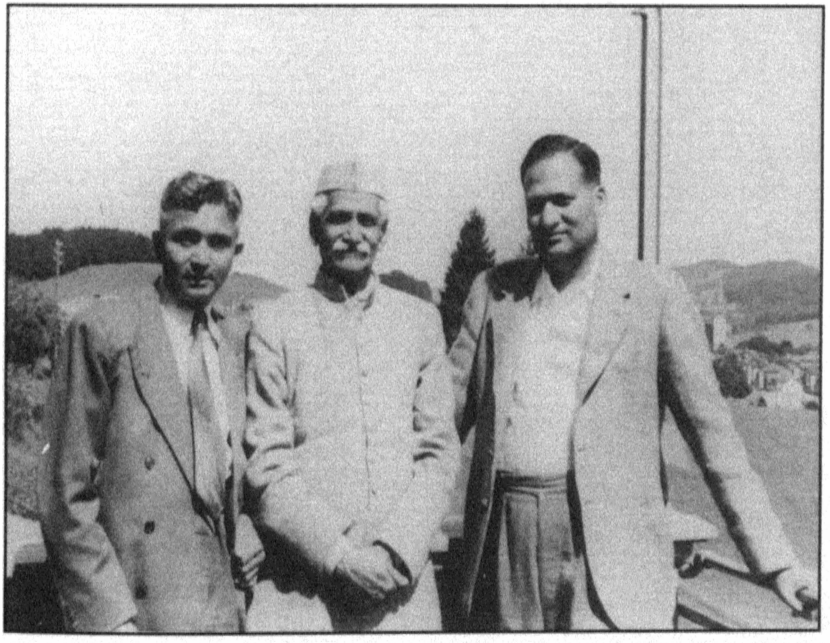

आचार्य नरेन्द्र देव 1954 में सत्यनारायण सिन्हा और रामकृष्ण बजाज के साथ

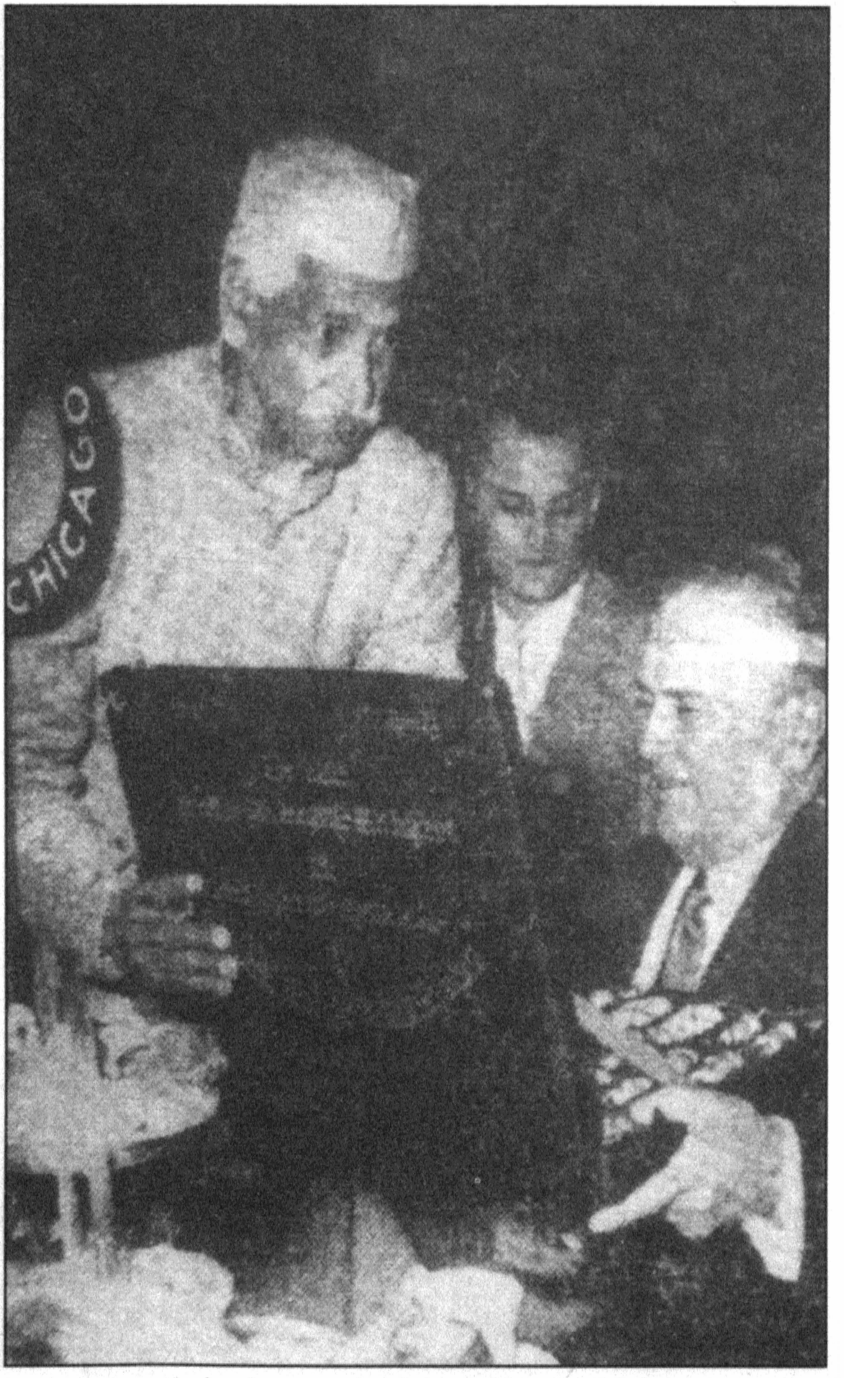

आचार्य नरेन्द्र देव 1954 में नई दिल्ली में मार्शल टीटो के साथ

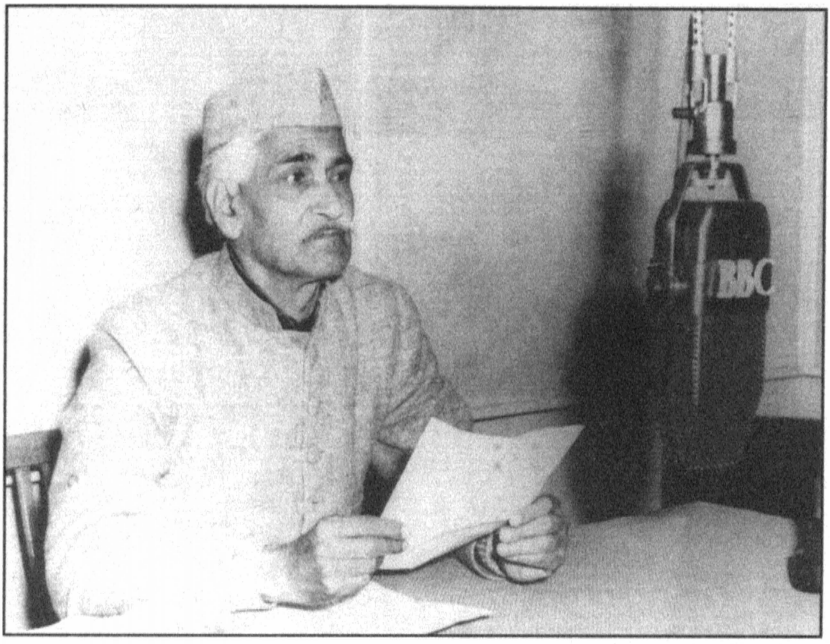

आचार्य नरेन्द्र देव 1954 में बी.बी.सी., लंदन में

आचार्य नरेन्द्र देव पंडित जवाहरलाल नेहरू के साथ

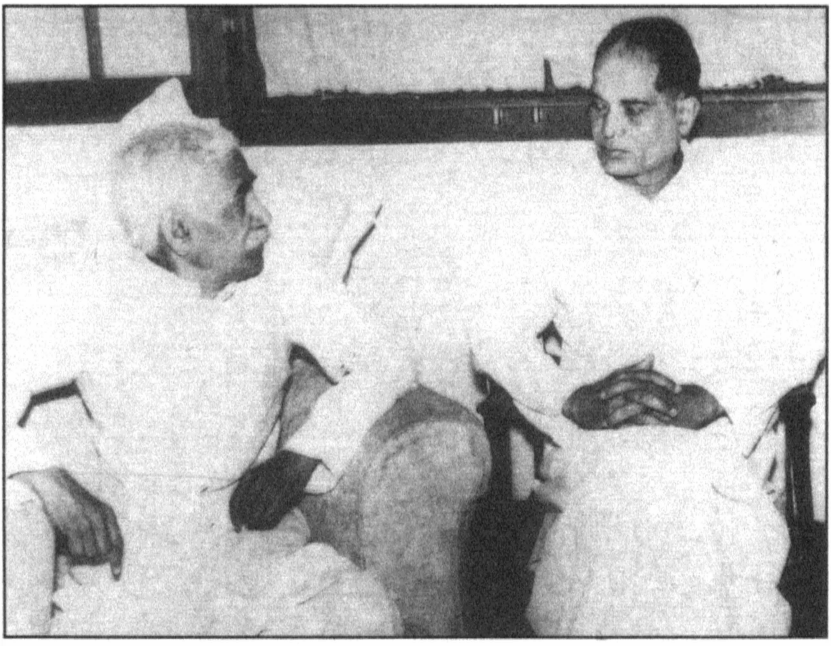

आचार्य नरेन्द्र देव जय प्रकाश नारायण के साथ

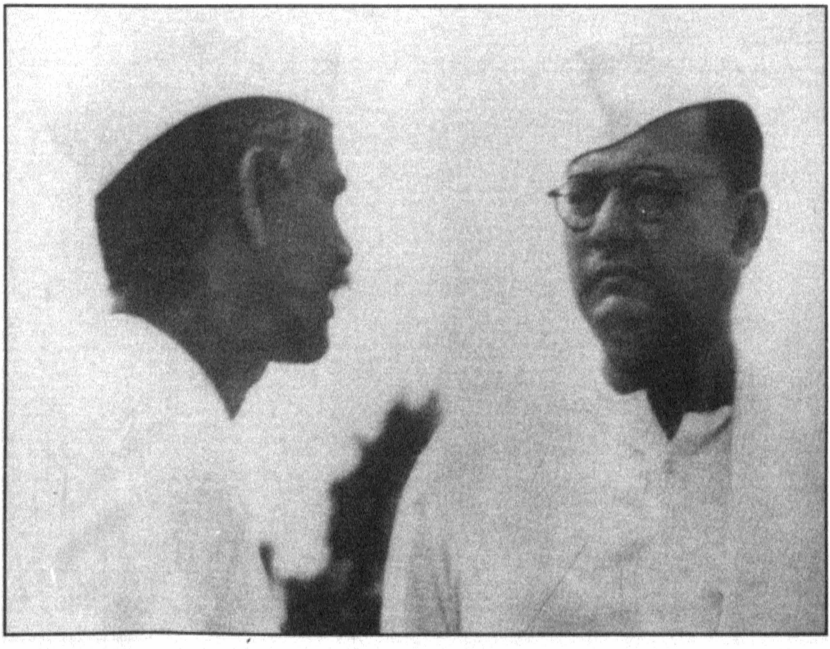

आचार्य नरेन्द्र देव सुभाष चन्द्र बोस के साथ

आचार्य नरेन्द्र देव एस.एम. जोशी के साथ

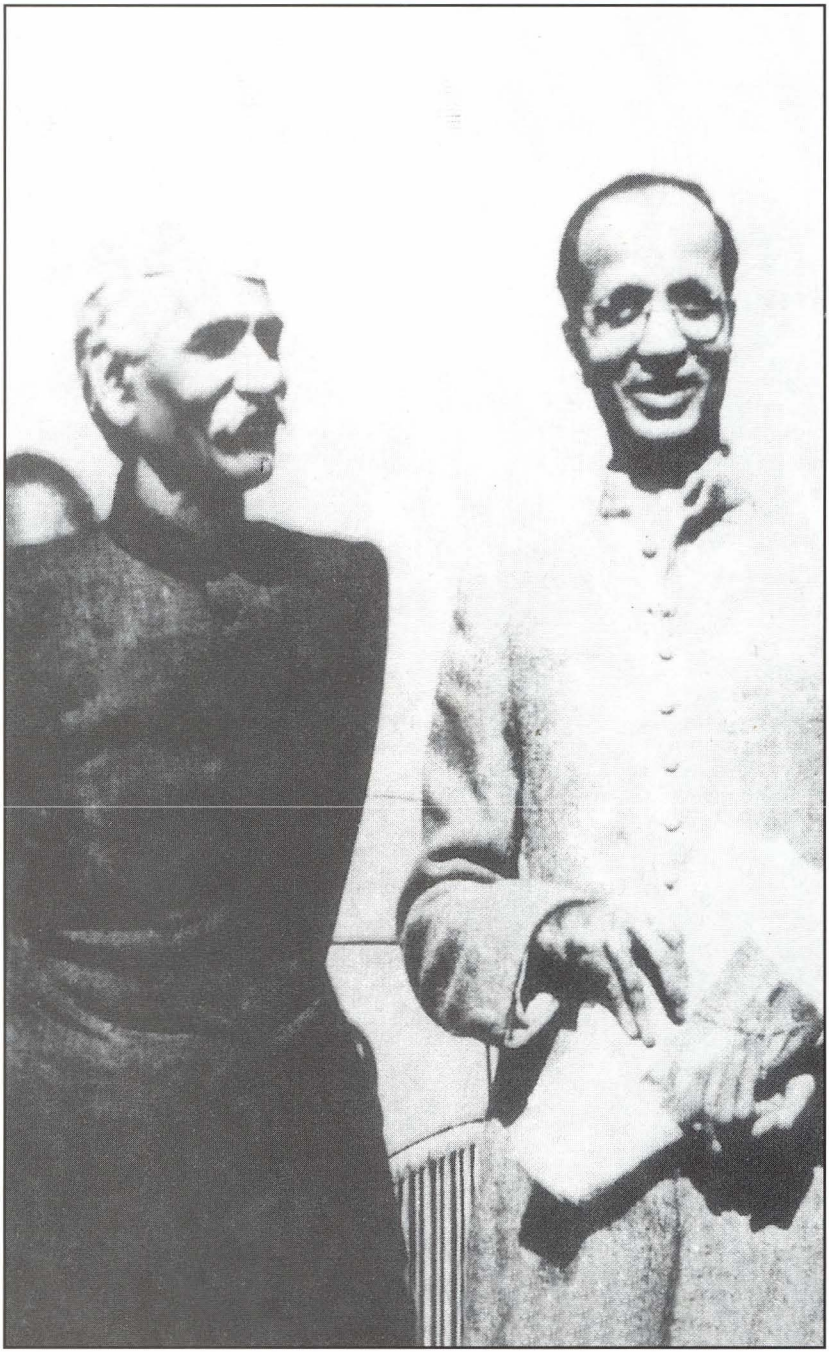

आचार्य नरेन्द्र देव बी.वी. केस्कर के साथ

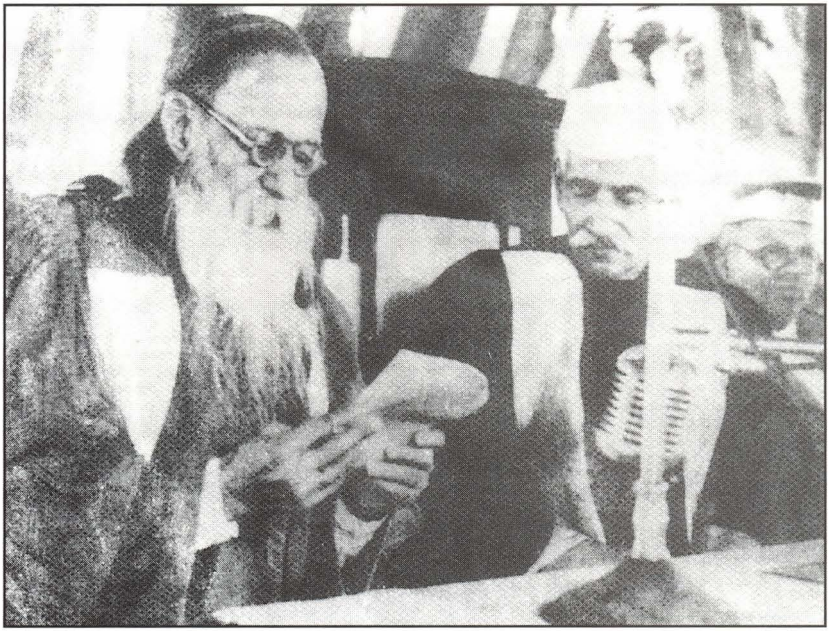

आचार्य नरेन्द्र देव डा. भगवानदास के साथ

आचार्य नरेन्द्र देव कांग्रेस समाजवादी नेताओं के साथ